

रविवार 14 जून, 2026

विषय — भगवान मनुष्य के संरक्षक हैं

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 103: 17, 18

"यहोवा की करुणा उसके डरवैयों पर युग युग, और उसका धर्म उनके नाती- अर्थात् उन पर जो उसकी वाचा का पालन करते और उसके उपदेशों को स्मरण करके उन पर चलते हैं।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 91: 9-12, 14

- ⁹ हे यहोवा, तू मेरा शरण स्थान ठहरा है। तू ने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है,
¹⁰ इसलिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दुःख तेरे डेरे के निकट आएगा ॥
¹¹ क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहां कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें।
¹² वे तुझ को हार्थों हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।
¹⁴ उसने जो मुझ से स्नेह किया है, इसलिये मैं उसको छुड़ाऊंगा; मैं उसको ऊंचे स्थान पर रखूंगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 31: 23 (से 2nd), 24

- ²³ हे यहोवा के सब भक्तों उससे प्रेम रखो! यहोवा सच्चे लोगों की तो रक्षा करता है, परन्तु जो अहंकार करता है, उसको वह भली भांति बदला देता है।
²⁴ हे यहोवा परआशा रखने वालों हियाव बान्धो और तुम्हारे हृदय दृढ़ रहें!

2. भजन संहिता 25: 7, 8, 14

- ⁷ हे यहोवा अपनी भलाई के कारण मेरी जवानी के पापों और मेरे अपराधों को स्मरण न कर; अपनी करुणा ही के अनुसार तू मुझे स्मरण कर ॥
⁸ यहोवा भला और सीधा है; इसलिये वह पापियों को अपना मार्ग दिखलाएगा।
¹⁴ यहोवा के भेद को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं, और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट करेगा।

3. भजन संहिता 46: 1, 2, 5, 10 (से :)

- 1 परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक।
- 2 इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं;
- 5 परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं; पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता करता है।
- 10 चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूँ। मैं जातियों में महान हूँ, मैं पृथ्वी भर में महान हूँ!

4. 1 राजा 16: 29 (से :)

- 29 यहूदा के राजा आसा के अड़तीसवें वर्ष में ओम्री का पुत्र अहाब इस्राएल पर राज्य करने लगा।

5. 1 राजा 17: 1 (से 1st), 1 (कहा)-3 (से 3rd), 4, 7 (से 2nd), 8, 9, 10 (और जब)-16 (से 2nd), 17-19, 21-24

- 1 और तिशाबी एलिय्याह जो गिलाद के परदेसियों में से था उसने अहाब से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूँ, उसके जीवन की शपथ इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो मैं बरसेगा, और न ओस पड़ेगी।
- 2 तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा,
- 3 कि यहां से चलकर पूरब ओर मुख करके करीत नाम नाले में जो यरदन के साम्हने है छिप जा।
- 4 उसी नाले का पानी तू पिया कर, और मैं ने कौवों को आज्ञा दी है कि वे तूझे वहां खिलाएं।
- 7 कुछ दिनों के बाद उस देश में वर्षा न होने के कारण नाला सूख गया।
- 8 तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा,
- 9 कि चलकर सीदोन के सारपत नगर में जा कर वहीं रह: सुन, मैं ने वहां की एक विधवा को तेरे खिलाने की आज्ञा दी है।
- 10 सो वह वहां से चल दिया, और सारपत को गया; नगर के फाटक के पास पहुंच कर उसने क्या देखा कि, एक विधवा लकड़ी बीन रही है, उसको बुलाकर उसने कहा, किसी पात्र में मेरे पीने को थोड़ा पानी ले आ।
- 11 जब वह लेने जा रही थी, तो उसने उसे पुकार के कहा अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी भी मेरे पास लेती आ।
- 12 उसने कहा, तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ मेरे पास एक भी रोटी नहीं है केवल घड़े में मुट्ठी भर मैदा और कुप्पी में थोड़ा सा तेल है, और मैं दो एक लकड़ी बीनकर लिए जाती हूँ कि अपने और अपने बेटे के लिये उसे पकाऊं, और हम उसे खाएं, फिर मर जाएं।
- 13 एलिय्याह ने उस से कहा, मत डर; जा कर अपनी बात के अनुसार कर, परन्तु पहिले मेरे लिये एक छोटी सी रोटी बना कर मेरे पास ले आ, फिर इसके बाद अपने और अपने बेटे के लिये बनाना।
- 14 क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जब तक यहोवा भूमि पर मैं न बरसाएगा तब तक न तो उस घड़े का मैदा चुकेगा, और न उस कुप्पी का तेल घटेगा।
- 15 तब वह चली गई, और एलिय्याह के वचन के अनुसार किया, तब से वह और स्त्री और उसका घराना बहुत दिन तक खाते रहे।
- 16 यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने एलिय्याह के द्वारा कहा था, न तो उस घड़े का मैदा चुका, और न उस कुप्पी का तेल घट गया।
- 17 इन बातों के बाद उस स्त्री का बेटा जो घर की स्वामिनी थी, रोगी हुआ, और उसका रोग यहां तक बढ़ा कि उसका सांस लेना बन्द हो गया।

- 18 तब वह एलिय्याह से कहने लगी, हे परमेश्वर के जन! मेरा तुझ से क्या काम? क्या तू इसलिये मेरे यहां आया है कि मेरे बेटे की मृत्यु का कारण हो और मेरे पाप का स्मरण दिलाए?
- 19 उसने उस से कहा अपना बेटा मुझे दे; तब वह उसे उसकी गोद से ले कर उस अटारी पर ले गया जहां वह स्वयं रहता था, और अपनी खाट पर लिटा दिया।
- 20 तब उसने यहोवा को पुकार कर कहा।
- 21 तब वह बालक पर तीन बार पसर गया और यहोवा को पुकार कर कहा, हे मेरे परमेश्वर यहोवा! इस बालक का प्राण इस में फिर डाल दे।
- 22 एलिय्याह की यह बात यहोवा ने सुन ली, और बालक का प्राण उस में फिर आ गया और वह जी उठा।
- 23 तब एलिय्याह बालक को अटारी पर से नीचे घर में ले गया, और एलिय्याह ने यह कहकर उसकी माता के हाथ में सौंप दिया, कि देख तेरा बेटा जीवित है।
- 24 स्त्री ने एलिय्याह से कहा, अब मुझे निश्चय हो गया है कि तू परमेश्वर का जन है, और यहोवा का जो वचन तेरे मुंह से निकलता है, वह सच होता है।

6. भजन संहिता 121: 7, 8

- 7 यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा; वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।
- 8 यहोवा तेरे आने जाने में तेरी रक्षा अब से ले कर सदा तक करता रहेगा॥

7. भजन संहिता 23: 1-6

- 1 यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।
- 2 वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है;
- 3 वह मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।
- 4 चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है॥
- 5 तू मेरे सताने वालों के साम्हने मेरे लिये मेज बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है।
- 6 निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 494: 10-11, 13 (से)-15, 19-24

दिव्य प्रेम हमेशा हर इंसान की ज़रूरत को पूरा करता आया है और हमेशा पूरा करेगा।...सभी इंसानों के लिए और हर समय, दिव्य प्रेम सभी अच्छाई देता है।

कृपा का चमत्कार प्रेम के लिए कोई चमत्कार नहीं है।...सही दिशा में तर्क, शारीरिक समझ की गलतियों को ठीक करने का काम करता है; लेकिन पाप, बीमारी और मौत असली लगेंगे (जैसे सोते हुए सपने के अनुभव असली लगते हैं) जब तक कि इंसान के हमेशा रहने वाले तालमेल का विज्ञान, वैज्ञानिक होने की अटूट सच्चाई के साथ उनके भ्रम को नहीं तोड़ देता।

2. 66: 6-16

परीक्षण नश्वर लोगों को एक भौतिक कर्मचारियों और एक टूटी हुई ईख पर झुकना नहीं सिखाते हैं, जो हृदय को छेदता है। हम आनंद और समृद्धि की धूप में इसे याद नहीं करते। दुःख लाभकारी है। महान क्लेश के माध्यम से हम राज्य में प्रवेश करते हैं। परीक्षण परमेश्वर की देखभाल के प्रमाण हैं। भौतिक विकास की उम्मीदों की मिट्टी में बोए गए बीज से आध्यात्मिक विकास अंकुरण नहीं करता है, लेकिन जब ये क्षय होता है, तो प्रेम आत्मा के ऊंचे उत्साह का प्रचार करता है, जिसमें पृथ्वी का कोई दाग नहीं होता है। अनुभव के प्रत्येक क्रमिक चरण में ईश्वरीय अच्छाई और प्रेम के नए विचार सामने आते हैं।

3. 261: 32-16

हर घंटे आदमी की अच्छी मांग, जिसमें होने की समस्या को हल करना। भलाई के प्रति समर्पण मनुष्य की ईश्वर पर निर्भरता को कम नहीं करता, बल्कि उसे बढ़ाता है। न तो अभिषेक परमेश्वर के प्रति मनुष्य के दायित्वों को कम करता है, बल्कि उनसे मिलने की सर्वोपरि आवश्यकता को दर्शाता है। क्रिश्चियन साइंस भगवान की पूर्णता से शून्य है, लेकिन यह उसे पूरी महिमा का वर्णन करता है। "बूढ़े आदमी को उसके कामों से दूर करने" के द्वारा, नश्वर "अमरता को पहिन लेते हैं।"

जैसे सोते हुए सपने के अनुभव असली लगते हैं हम नश्वर विश्वास के उथलेपन में गोता लगाकर ईश्वर की रचना की प्रकृति और गुणवत्ता को थाह नहीं दे सकते। हमें जीवन में सत्य और भौतिकता को खोजने के अपने अथक स्पंदन को उलट देना चाहिए - और ईश्वर के अमर विचार के लिए नश्वर से ऊपर, भौतिक इंद्रियों की गवाही से ऊपर उठना होगा। ये स्पष्ट, उच्च विचार भगवान-जैसे मनुष्य को उसके अस्तित्व के पूर्ण केंद्र और सीमा तक पहुंचने के लिए प्रेरित करते हैं।

4. 102: 30 (मानवता)-2

मानव जाति को सीखना चाहिए कि बुराई शक्ति नहीं है। इसकी तथाकथित निरंकुशता है, लेकिन कुछ भी नहीं है। क्रिश्चियन साइंस बुराई के साम्राज्य को दूर करता है, और पूर्व में परिवारों में और इसलिए समुदाय में स्नेह और सदाचार को बढ़ावा देता है।

5. 571: 15-19

हर समय और सभी परिस्थितियों में, अच्छाई के साथ बुराई को दूर करें। अपने आप को जानें, और ईश्वर ज्ञान और बुराई पर विजय के अवसर की आपूर्ति करेगा। प्यार की कशमकश में जकड़े, मानवीय घृणा आप तक नहीं पहुंच सकती।

6. 264: 7-12

नश्वर प्राणियों को लुप्त होती, सीमित आकृतियों से परे देखना होगा, यदि वे चीजों का सही अर्थ प्राप्त कर सकें। मन के अज्ञात क्षेत्र के अतिरिक्त दृष्टि कहाँ विश्राम करेगी? हमें यह देखना चाहिए कि हम कहाँ चलेंगे, और हमें उससे सारी शक्ति प्राप्त करने के रूप में कार्य करना चाहिए जिसमें हमारा अस्तित्व है।

7. 139: 4-9

शुरुआत से लेकर अंत तक, पवित्रशास्त्र आत्मा, मन की बात की विजय से भरपूर है। मूसा ने मन की शक्ति को उसके द्वारा सिद्ध किया, जिसे पुरुषों ने चमत्कार कहा; तब यहोशू, एलिय्याह और एलीशा ने किया। संकेत और चमत्कार के साथ ईसाई युग की शुरुआत हुई।

8. 387: 27-32

ईसाइयत का इतिहास अपने स्वर्गीय पिता, सर्वशक्तिमान मन, द्वारा मनुष्य पर समर्थित शक्ति और रक्षा शक्ति के उदात्त प्रमाण प्रस्तुत करता है, जो मनुष्य को विश्वास और समझ प्रदान करता है जिससे वह खुद का बचाव करता है, न केवल प्रलोभन से, बल्कि शारीरिक से।

9. 591: 21-22

चमत्कार। जो दैवीय रूप से स्वाभाविक है, लेकिन उसे मानवीय रूप से सीखना चाहिए; विज्ञान की एक घटना।

10. 134: 31-8

एक चमत्कार भगवान के नियम को पूरा करता है, लेकिन उस कानून का उल्लंघन नहीं करता है। वर्तमान में यह तथ्य चमत्कार से अधिक रहस्यमय प्रतीत होता है। भजनहार ने गाया: "हे समुद्र, तुझे क्या हुआ, कि तू भागा? और हे यर्दन तुझे क्या हुआ, कि तू उलटी बही? हे पहाड़ों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़ों की नाई, और हे पहाड़ियों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़- बकरियों के बच्चों की नाई उछलीं? हे पृथ्वी प्रभु के साम्हने, हां याकूब के परमेश्वर के साम्हने थरथरा" यह चमत्कार किसी विकार का परिचय नहीं देता है, लेकिन मौलिक आदेश को प्रकट करता है, भगवान के अपरिवर्तनीय कानून के विज्ञान की स्थापना।

11. 274: 12-16

आत्मा की इंद्रियाँ प्रेम में निवास करती हैं, और वे सत्य और जीवन का प्रदर्शन करती हैं। इसलिए ईसाई धर्म और इसकी व्याख्या करने वाला विज्ञान आध्यात्मिक समझ पर आधारित है, और वे पदार्थ के तथाकथित नियमों का स्थान लेते हैं।

12. 135: 17-20

यह कहा गया है, और यह सच है, कि ईसाई धर्म विज्ञान होना चाहिए, और विज्ञान ईसाई धर्म होना चाहिए, अन्यथा एक या दूसरा झूठा और बेकार है; लेकिन न तो महत्वहीन या असत्य है, और वे प्रदर्शन में एक जैसे हैं। यह एक दूसरे के समान होने का प्रमाण देता है। जैसा कि जीसस ने सिखाया था कि ईसाई धर्म पंथ नहीं था, न ही कोई समारोह, और न ही कर्मकांडी यहोवा की ओर से कोई विशेष भेंट; लेकिन यह दिव्य प्रेम का प्रदर्शन था जिसमें त्रुटि

करना और बीमारों को ठीक करना, न केवल मसीह, या सत्य के नाम पर, लेकिन सत्य के प्रदर्शन में, जैसा कि दिव्य प्रकाश के चक्रों में होना चाहिए।

13. 495: 28-31

क्रिश्चियन साइंस के दिव्य सिद्धांत का पालन करें और ज्ञान, सत्य और प्रेम में निरंतरता का पालन करते हुए, ईश्वर के आकर्षण का पालन करें।

14. 393: 8-10 (से 2nd .), 12-15

मन शारीरिक इंद्रियों का स्वामी है, और बीमारी, पाप और मृत्यु को जीत सकता है। ...अपने शरीर पर अधिकार कर लो, और उसकी भावना और कार्य को नियंत्रित करो। आत्मा के सामर्थ्य में वृद्धि का विरोध करना अच्छा है। ईश्वर ने मनुष्य को इसके लिए सक्षम बनाया है, और कुछ भी मनुष्य में दिव्य रूप से दी गई क्षमता और शक्ति को नष्ट नहीं कर सकता है।

15. 470: 32-5

साइंस में ईश्वर और मनुष्य के संबंध, ईश्वरीय सिद्धांत और विचार अविनाशी हैं; और विज्ञान जानता है कि कोई चूक नहीं हुई है और न ही सद्भाव में लौटा लेकिन यह ईश्वरीय आदेश या आध्यात्मिक कानून रखता है, जिसमें भगवान और वह जो कुछ भी बनाता है वह परिपूर्ण और शाश्वत है, अपने सनातन इतिहास में अपरिवर्तित रहा है।

16. 264: 24-31

आध्यात्मिक जीवन और आशीर्वाद ही प्रमाण हैं, जिसके द्वारा हम सच्चे अस्तित्व को पहचान सकते हैं और उस अकथनीय शांति को महसूस कर सकते हैं जो आध्यात्मिक प्रेम को अवशोषित करने से आती है।

जब हम क्रिश्चियन साइंस में रास्ता सीखते हैं और मनुष्य के आध्यात्मिक होने को पहचानते हैं, तो हम भगवान की रचना को समझेंगे और समझेंगे, - पृथ्वी और स्वर्ग और मनुष्य की सभी महिमा।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6